दीपोत्सव

वैसे तो हमारे यहां कई त्यौहार मनाए जाते हैं, लेकिन दीपावली का विशेष महत्त्व है। यह हिन्दुओं का सबसे प्रमुख त्यौहार तो है ही, साथ इसका ज्योतिष तंत्र-मंत्र साधना के लिए भी विशेष महत्त्व है। यह त्यौहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से लेकर कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तक मनाया जाता है। इन पांच दिनों तक त्यौहार मनाने का क्या औचित्य है, कैसा मनाया जाता, कैसे पूजा करनी चाहिए ? आदि विषयों को यहां विस्तार से समझाया गया है, ताकि पाठक इसका पूरा लाभ ले सकें।

- आचार्य अनुपम जौली

www.astrologyrays.com

धनतेरस

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी धनतेरस कहलाती है। इस दिन चाँदी का बर्तन खरीदना अत्यन्त शुभ माना गया है। वस्तुत: यह यमराज से संबंध रखने वाला व्रत है।

इस दिन सायंकाल घर के बाहर मुख्य दरवाजे पर एक पात्र में अन्न रखकर उसके ऊपर यमराज के निमित्त दक्षिणाभिमुख दीपदान करना चाहिए। उसका गन्धादि से पूजन करें। यमुना जी यमराज की बहन है, इसलिए इस दिन युमना स्नान का भी विशेष महात्म्य है। दीपदान करते समय निम्नलिखित प्रार्थना करनी चाहिए :

मृत्युना पाशहस्तेन कालेन भार्यया सह।
त्रयोदश्यां दीपदानात्सूर्यज: प्रीयतामिति॥

क्यों जलाते हैं धनतेरस को दीया? : एक बार यमराज ने अपने दूतों से कहा कि तुम लोग मेरी आज्ञा से मृत्युलोक के प्राणियों के प्राण हरण करते हो, क्या तुम्हें ऐसा करते समय कभी दु:ख भी हुआ है या कभी दया भी आई है? इस पर दूतों ने कहा - महाराज! हम लोगों का कर्म अत्यन्त क्रूर है। किसी युवा प्राणी की असामयिक मृत्यु पर उसका प्राण हरण करते समय वहां का करुणक्रन्दन सुनकर हम लोगों का पाषाण हृदय भी विचलित हो जाता है।

एक बार हमें एक राजकुमार के प्राण उसके विवाह के चौथे दिन ही हरण करने पड़े। उस समय वहां का करुणक्रुन्दन, चीत्कार और हाहाकार देख-सुनकर हमें अपने कृत्य से अत्यन्त घृणा हो गई। उस मंगलमय उत्सव के बीच हमारा यह कृत्य अत्यन्त घृणित था। इससे हमारा हृदय अत्यन्त दु:खी हो गया। अत: हे स्वामी! कृपा करके कोई ऐसी युक्ति बताइये जिससे ऐसी असामयिक मृत्यु न हो।

इस पर यमराज ने कहा कि जो व्यक्ति कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को मेरे उद्देश्य से दीपदान करेगा, उसकी असामयिक मृत्यु नहीं होगी।

नरक चतुर्दशी

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी नरक चतुर्दशी कहलाती है। सनत्कुमार संहिता के अनुसार इसे पूर्वविद्धा लेना चाहिए।

इस दिन अरुणोदय से पूर्व प्रत्यूष काल में स्नान करने से मनुष्य को यमलोक का दर्शन नहीं करना पड़ता। यद्यपि कार्तिक मास में तेल नहीं लगाना चाहिए। फिर भी, इस तिथि विशेष को शरीर में तेल लगाकर स्नान करना चाहिए। इस दिन जो व्यक्ति सूर्योदय के बाद स्नान करता है, उसके शुभ कार्यों का नाश हो जाता है। स्नान से पूर्व शरीर पर अपामार्ग का भी प्रोक्षण करना चाहिए। अपामार्ग को निम्न मंत्र पढ़कर मस्तक पर घुमाना चाहिए। इससे नरक का भय नहीं रहता :

सितालोष्ठसमायुक्तं सकण्टकदलान्वितम्।
हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाणः पुनः पुनः॥

स्नान करने के बाद शुद्ध वस्त्र पहनकर तिलक लगाकर दक्षिणाभिमुख से निम्न नाम मंत्रों से प्रत्येक नाम से तिलयुक्ततीन-तीन जलाञ्जलि देनी चाहिए। यह यम-तर्पण कहलाता है। इससे वर्षभर के पाप नष्ट हो जाते हैं।

'ॐ यमाय नमः, ॐ धर्मराजाय नमः, ॐ मृत्यवे नमः, ॐ अन्तकाय नमः, ॐ वैवस्वताय नमः, ॐ कालाय नमः, ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः, ॐ औदुम्बराय नमः, ॐ दधाय नमः, ॐ नीलाय नमः, ॐ परमेष्ठिने नमः, ॐ वृकोदराय नमः, ॐ चित्राय नमः, ॐ चित्रगुप्ताय नमः।'

इस दिन देवताओं का पूजन करके दीपदान करना चाहिए। मंदिरों, गुप्तगृहों, रसोईघर, स्नानघर, देव वृक्षों के नीचे, सभा भवन, नदियों के किनारे, चारदीवारी, बगीचे, बावली, गली-कूचे, गौशाला आदि प्रत्येक स्थान पर दीपक जलाना चाहिए। यमराज के उद्देश्य से त्रयोदशी से अमावस्या तक दीप जलाने चाहिए।

कथा : वामनावतार में भगवान श्री हरि ने संपूर्ण पृथ्वी नाप ली। बलि के दान और भक्ति से प्रसन्न होकर वामन भगवान ने उनसे वर मांगने को कहा। उस समय बलि ने प्रार्थना की कि कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी सहित इन तीन दिनों में मेरे राज्य का जो भी व्यक्ति यमराज के उद्देश्य से दीप दान करे, उसे यम यातना न हो और इन तीन दिनों में दीपावली मनाने वाले का घर लक्ष्मी जी कभी न छोड़े। भगवान श्री हरि ने कहा - एवमस्तु।

श्रीहनुमान जन्म-महोत्सव

आश्विनस्यासिते पक्षे भूतानां च महानिशि।
भौमवारेऽञ्जनादेवी हनूमन्तमजीजनत्॥

अमान्त आश्विन (कार्तिक)कृष्ण चतुर्दशी भौमवार की महानिशा (अर्धरात्रि) में अञ्जनादेवी के उदर से हनुमानजी का जन्म हुआ था। अतः हनुमत्- उपासकों को चाहिए कि वे इस दिन प्रातः स्नानादि करके **'मम शौर्यौदार्यधैर्यादिवृद्ध्यर्थं हनुमत्प्रीतिकामनया हनुमज्जयन्तीमहोत्सवमहं करिष्ये'** यह संकल्प करके हनुमान्‌जी का यथाविधि षोड्शोपचार पूजन करें। पूजन के उपचारों में गन्धपूर्ण तेल में सिन्दूर मिलाकर उससे मूर्ति को चर्चित करे।

पुन्नाम (पुरुष नाम के हजारा, गुलहजरा आदि) के पुष्प चढ़ाएं तथा नैवेद्य में घृतपूर्ण चूरमा या घी में सेंके हुए और शर्करा मिले हुए आटे का मोदक एवं केला, अमरूद आदि फल अर्पण करके सुन्दरकाण्ड का पाठ करें। रात्रि के समय घृत पूर्ण दीपकों की दीपावली का प्रदर्शन कराएं।

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को हनुमज्जन्मोत्सव ज़्यों ?

यद्यपि अधिकांश उपासक इसी दिन हनुमज्जयन्ती मनाते हैं और व्रत रखते हैं, परन्तु शास्त्रान्तर में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को हनुमज्जन्म का उल्लेख किया है। कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को हनुमज्जयन्ती मनाने का यह कारण है कि लंका विजय के बाद श्रीराम अयोध्या आए।

इसके बाद भगवान श्रीरामचन्द्रजी और भगवती जानकीजी ने वानरादि को विदा करते समय यथायोग्य पारितोषिक दिया था। उस समय इसी दिन सीताजी ने हनुमानजी को पहले तो अपने गले की माला पहनाई। इसमें बड़े-बड़े बहुमूल्य मोती और अनेक रत्न थे, परन्तु उसमें राम-नाम न होने से हनुमानजी इससे संतुष्ट नहीं हुए। तब भगवती जानकीजी ने अपने ललाट पर लगा हुआ सौभाग्यद्रव्य सिन्दूर प्रदान किया और कहा - इससे बढ़कर मेरे पास अधिक महत्व की कोई वस्तु नहीं है। तुम इसे हर्ष के साथ धारण करो और सदैव अजर-अमर रहो। यही कारण है कि कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को हनुमज्जन्म-महोत्सव मनाया जाता है और तेल सिन्दूर चढ़ाया जाता है।

॥ श्री महालक्ष्मी पूजन॥

हमारे देश में मनाए जाने वाले सभी त्यौहारों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टियों से अप्रतिम महत्त्व है। सामाजिक दृष्टि से इस पर्व का महत्त्व इसलिए है कि दीपावली आने से पूर्व ही लोग अपने घर-द्वार की स्वच्छता पर ध्यान देते हैं। घर का कूड़ा-करकट साफ करते हैं। टूट-फूट सुधरवाकर घर की दीवारों पर सफेदी, दरवाजों पर रंग-रोगन करवाते हैं। इससे उस स्थान की न केवल आयु ही बढ़ जाती है, बल्कि आकर्षण भी बढ़ जाता है।

दीपावली के दिन धन-सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी भगवती महालक्ष्मी की पूजा करने का विधान है। शास्त्रों का कथन है कि जो व्यक्ति दीपावली को दिन-रात जागरण करके लक्ष्मी की पूजा करता है उसके घर लक्ष्मीजी का निवास होता है। आलस्य और निद्रा में पड़कर जो दीपावली यूं ही गंवाता है, उसके घर से लक्ष्मी रूठकर चली जाती है।

ब्रह्म पुराण में लिखा है कि कार्तिक की अमावस्या को अर्ध रात्रि के समय लक्ष्मी महारानी सद्गृहस्थों के घर में जहां-तहां विचरण करती हैं। इसलिए अपने घर को सब प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुशोभित करके दीपावली तथा दीपमालिका मनाने से लक्ष्मीजी प्रसन्न होती हैं और वहां स्थायी रूप से निवास करती हैं। यह अमावस्या प्रदोष काल से आधी रात तक रहने वाली श्रेष्ठ होती है। यदि आधी रात तक न भी रहे तो प्रदोषव्यापिनी दीपावली माननी चाहिए।

पाठकों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

प्राय: प्रत्येक घर में लोग अपने रीति-रिवाज के अनुसार गणेश-लक्ष्मी पूजन तथा द्रव्यलक्ष्मी-पूजन करते हैं। कुछ स्थानों में दीवार पर अथवा काष्ठपट्टि का पर खड़िया मिट्टी तथा विभिन्न रंगों द्वारा चित्र बनाकर या पाटे पर गणेश लक्ष्मी की मूर्ति रखकर कुछ चांदी आदि के सिक्के रखकर इनका पूजन करते हैं तथा थाली में तेरह अथवा छब्बीस दीपकों के मध्य तेल से प्रज्वलित चौमुखा दीपक रखकर दीपमालिका का पूजन भी करते हैं और पूजा के अनन्तर उन दीपों को घर के मुख्य-मुख्य स्थानों पर रख देते हैं। चौमुखा दीपक रातभर जले ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए।

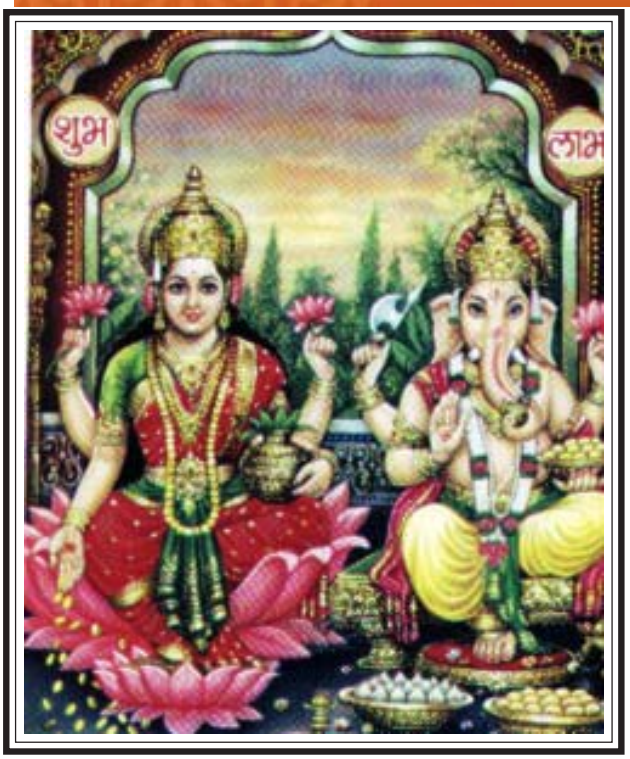

पूजन का समय

इस वर्ष कार्तिक कृष्ण अमावस्या बुधवार 7 नवम्बर, 2018 ई. को अमावस्या होने से इसी दिन दीपावली मनाई जाकर लक्ष्मी पूजन की जाएगी। लक्ष्मी पूजन प्रदोष युक्त अमावस्या को स्थिर लग्न व स्थिर नवांश में किया जाना सर्वश्रेष्ठ होता है। इस वर्ष लक्ष्मी पूजन का समय जयपुर में इस प्रकार रहेगाः

प्रदोष काल : सायं 5.36 से 8.14 तक

वृष लग्न : सायं 06.08 से रात्री 8.05 बजे तक

सिंह लग्न : मध्य रात्रि बाद 12:38 से 2:54 तक

चौघड़िया मुहूर्त : शुभ, अमृत व चर के रात्री 7.15 से मध्यरात्री12.10 तक, **लाभ** का चौघड़िया मध्य रात्रि बाद 3.27 से 5.06 बजे तक, **सबसे श्रेष्ठ समय : सांय 6.20 से 6.33 तक, जिसमें प्रदोष काल, स्थिर वृष लग्न तथा कुंभ का स्थिर नवांश रहेगा।**

कार्तिक कृष्ण अमावस्या को भगवती श्री महालक्ष्मी एवं भगवान गणेश की नूतन प्रतिमाओं का प्रतिष्ठापूर्वक विशेष पूजन किया जाता है। पूजन के लिए किसी चौकी अथवा कपड़े के पवित्र आसन पर गणेशजी के दाहिने भाग में माता महालक्ष्मी को स्थापित करना चाहिए।

पूजन के दिन घर को स्वच्छ कर पूजा स्थान को भी पवित्र कर लेना चाहिए एवं स्वयं भी पवित्र होकर श्रद्धापूर्वक सायंकाल इनका पूजन करना चाहिए। मूर्तिमयी श्री महालक्ष्मीजी के पास ही किसी पवित्र पात्र में केसर युक्त चन्दन से अष्टदल कमल बनाकर उस पर द्रव्य-लक्ष्मी (रूपयों) को भी स्थापित करके एक साथ ही दोनों की पूजा करनी चाहिए। सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख हो आचमन, पवित्री-धारण, मार्जन-प्राणायाम कर अपने ऊपर तथा पूजा सामग्री पर निम्न मंत्र पढ़कर जल छिड़कें :

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्था गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

तदनन्तर जल-अक्षतादि लेकर पूजन का संकल्प करें :

संकल्प : **ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य मासोत्तमे मासे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे पुण्यायाममावास्यायं तिथौ... वासरे ..... गोत्रोत्पन्नः.... .... गुप्तोऽहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलावाप्तिकामनया ज्ञाताज्ञातकायिकवाचिकमानसिक सकलपापनिवृत्तिपूर्वकं स्थिरलक्ष्मीप्राप्तये श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं महालक्ष्मीपूजनं कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये। तदङ्गत्वेन गौरीगणपत्यादिपूजनं च करिष्ये।**

– ऐसा कहकर संकल्प का जल आदि छोड़ दें।

पूजन से पूर्व नूतन प्रतिमा की निम्न रीति से प्राण प्रतिष्ठा कर लें।

प्रतिष्ठा – बायें हाथ में अक्षत लेकर निम्नलिखित मंत्रों का पढ़ते हुए दाहिने हाथ से उन अक्षतों को प्रतिमा पर छोड़ते जाएं –

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तमोऽम्प्रतिष्ठ॥
ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमचायैमामहेति च कश्चन॥

इस प्रकार प्रतिष्ठाकर सर्वप्रथम भगवान गणेशजीका पूजन करें। तदनन्तर कलश पूजन तथा षोड्शमातृ का पूजन करें। प्रधान

पूजा में मंत्रों द्वारा भगवती महालक्ष्मी का षोड्शोपचार पूजन करें। **ॐ महालक्ष्म्यै नमः।** इस नाम मंत्र से भी उपचारों द्वारा पूजा की जा सकती है।

प्रार्थना

विधिपूर्वक श्रीमहालक्ष्मी का पूजन करने के अनन्तर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें :

सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकै-
र्युक्तं सदायत्तव पादपङ्कजम्।
परावरं पातु वरं सुमङ्गलं
नमामि भक्त्याखिलकामसिद्धये॥
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥
नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात्॥

'ॐ महालक्ष्म्यै नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।' प्रार्थना करते हुए नमस्कार करें।

समर्पण : पूजन के अन्त में **'कृतेनानेनपूजनेन भगवती महालक्ष्मीदेवी प्रीयताम्, न मम।'** - यह वाक्य उच्चारणकर समस्त पूजन-कर्मभगवती महालक्ष्मी को समर्पित करें तथा जल गिरायें।

भगवती महालक्ष्मी के यथालब्धोपचार पूजन के अनन्तर महालक्ष्मीपूजन के अङ्गरूप, देहलीविनायक, मसिपात्र, लेखनी, सरस्वती, कुबेर, तुला-मान तथा दीपकों की पूजा की जाती है।

देहलीविनायक पूजन

व्यापारिक प्रतिष्ठानों में दीवारों पर ॐ श्रीगणेशाय नमः, स्वस्तिक-चिह्न, शुभ-लाभ आदि मांगलिक एवं कल्याणकर शब्द सिन्दूरादि से लिखे जाते हैं। इन्हीं शब्दों पर **'ॐ देहलीविनायकाय नमः'** इस नाम मंत्र द्वारा गन्ध-पुष्पादि से पूजन करें।

श्रीमहाकाली (दवात) पूजन

स्याहीयुक्त दवात को भगवती महालक्ष्मी के सामने पुष्प तथा अक्षत पुञ्ज में रखकर उसमें सिन्दूर से स्वास्तिक बना दें तथा मौली लपेट दें। **'ॐ श्रीमहाकाल्यै नमः'** इस नाममंत्र से गन्ध पुष्पादि पुञ्जों में रखकर उसमें सिन्दूर से स्वास्तिक बना दें तथा मौली लपेट दें। **'ॐ श्री महाकाल्यै नमः'** इस नाम मंत्र से गन्ध पुष्पादि पञ्चोपचारों से या षोडशोपचारों से दवात में भगवती महाकाली का पूजन करें और अन्त में इस प्रकार प्रार्थनापूर्वक उन्हें प्रणाम करें -

कालिके त्वं जगन्मातर्ममसिरूपेण वर्तसे।
उत्पन्नात्वं च लोकानां व्यवहारप्रसिद्धये॥
याकालिका रोगहरा सुवन्द्या
भक्तैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः।
जनैर्जनानां भयहारिणी च
सा लोकमाता मम सौख्यदास्तु॥

लेखनी पूजन

लेखनी (कलम) पर मौली बांधकर सामने रख लें और

लेखनी निर्मिता पूर्वं ब्रह्मणा परमेष्ठिना।
लोकानां च हितार्थाय तस्मात्तां पूजयाम्यहम्॥

'ॐ लेखनीस्थायै देव्यै नमः' इस नाममंत्र द्वारा गन्ध-पुष्पाक्षत आदि से पूजन कर इस प्रकार प्रार्थना करें -

शास्त्राणां व्यवहाराणां विद्यानामाप्नुयाद्यतः।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि मम हस्ते स्थिरा भव॥

सरस्वती (बहीखाता) पूजन

बही, बसना तथा थैली में रोली या केसरयुक्त चन्दन से स्वस्तिक चिह्न बनाएं एवं थैली में पांच हल्दी की गाँठें, धनिया, कमलगट्टा, अक्षत, दूर्वा और द्रव्य रखकर उसमें सरस्वती का पूजन करें। सर्वप्रथम सरस्वती जी का ध्यान इस प्रकार करें :

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

'ॐ वीणापुस्तधारिण्यै श्रीसरस्वत्यै नमः' इस नाम मंत्र से गन्धादि उपचारों द्वारा पूजन करें।

कुबेर पूजन

तिजोरी अथवा रुपये रखे जाने वाले संदूक आदि को स्वास्तिकादि से अलंकृत कर उसमें निधिपति कुबेर का आह्वान करें :

आवाहयामि देव त्वामिहायाहि कृपां कुरु।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर॥

आह्वान के पश्चात **'ॐ कुबेराय नमः'** इस नाम मंत्र से यथालब्धोपचार पूजन कर अन्त में इस प्रकार प्रार्थना करें :

धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्मधिपाय च।
भगवन् त्वत्प्रसादेन धनधान्यादिसम्पदः॥

इस प्रकार प्रार्थना कर पूर्व पूजित हल्दी, धनिया, कमलगट्टा, द्रव्य, दूर्वादि से युक्त थैली तिजोरी में रखें।

तुला पूजन

सिन्दूर से तराजू आदि पर स्वास्तिक बना लें। मौली लपेटकर तुलाधिष्ठातृ देवता का इस प्रकार ध्यान करना चाहिए-

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोगिना।

इसके बाद 'ॐ तुलाधिष्ठातृदेवतायै नमः' इस नाममंत्र से गन्धाक्षतादि उपचारों द्वारा पूजन कर नमस्कार करें।

दीपमालिका पूजन

किसी पात्र में ग्यारह, इक्कीस या उससे अधिक दीपकों को प्रज्वलित कर महालक्ष्मी के समीप रखकर उस दीपज्योतिका **'ॐ दीपावल्यै नमः'** इस नाममंत्र से गन्धादि उपचारों द्वारा पूजन कर इस प्रकार प्रार्थना करें –

त्वंज्योतिस्त्वं रविश्चन्द्रो विद्युदग्निश्च तारकाः।
सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपावल्यै नमो नमः॥

दीपमालिकाओं का पूजन कर अपने आचार के अनुसार ईख, पानीफल, धानका लावा इत्यादि पदार्थ चढ़ायें। धानका लावा (खील) गणेश, महालक्ष्मी तथा अन्य सभी देवी-देवताओं को भी अर्पित करें। अन्त में अन्य सभी दीपकों को प्रज्वलित कर उनसे सम्पूर्ण गृह को अलंकृत करें।

प्रधान आरती

इस प्रकार भगवती महालक्ष्मी तथा उनके सभी अंग-प्रत्यंगों का पूजन कर लेने के अनन्तर प्रधान आरती करनी चाहिए। इसके लिए एक थाली में स्वास्तिक आदि मांगलिक चिह्न बनाकर अक्षत तथा पुष्पों के आसन पर किसी दीपक आदि में घृतयुक्त बत्ती प्रज्वलित करें।

एक पृथक पात्र में कर्पूर भी प्रज्वलित कर वह पात्र भी थाली में यथास्थान रख लें। आरती थाल का जल से प्रोक्षण कर लें। पुनः आसन पर खड़े होकर अन्य पारिवारिक जनों के साथ घंटानादपूर्वक निम्न आरती गाते हुए महालक्ष्मीजी की मंगल आरती करें :

आरती

ॐ जय लक्ष्मी अम्बे, मैया जय आनन्द कन्दे।
सत् चित् नित्य स्वरूपा, सुर नर मुनि सोहे॥ ॐ जय....
कनक समान कलेवर, दिव्याम्बर राजे। मैया.....
श्री पीठे सुर पूजित, कमलासन साजे॥ ॐ जय.....
तुम हो जग की जननी, विश्वम्भर रूपा। मैया.....
दुख दारिद्रय विनाशे, सौभाग्य सहिता॥ ॐ जय....
नाना भूषण भाजत, राजत सुखकारी। मैया.....
कानन कुण्डल सोहत, श्री विष्णु प्यारी॥ ॐ जय...
उमा तुम्हीं, इन्द्राणी तुम सबकी रानी। मैया....
पद्म शंख कर धारी, भुक्ति, मुक्ति दायी॥ॐ जय...
दुःख हरती सुख करती, भक्तन हितकारी। मैया...
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी॥ ॐ जय.....
अमल कमल घृत मातः, जग पावन कारी। मै....
विश्व चराचर तुम ही, तुम विश्वम्भर दायी॥ ॐ जय...
कंचन थाल विराजत, शुभ्र कपूर बाती। मैया.....
गावत आरती निशदिन, जन मन शुभ करती॥ ॐ जय.....

मंत्र-पुष्पाञ्जलि

दोनों हाथों में कमल आदि के पुष्प लेकर हाथ जोड़ें और निम्न मंत्र का पाठ करें :

ॐ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्मः, स्म परिपालय देवि विश्वमं॥
ॐ श्रीमहालक्ष्म्यै नमः, मंत्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

ऐसा कहकर हाथ में लिए फूल महालक्ष्मी पर चढ़ा दें। प्रदक्षिणा कर साष्टांग प्रमाण करें। पुनः हाथ जोड़कर क्षमा प्रार्थना करें :

आवाहनं न जानामिन जानामि क्षमस्व परमेश्वरि॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु में॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥

पुनः प्रणाम करके **'ॐ अनेन यथाशक्त्यर्चनेन श्रीमहालक्ष्मीः प्रसीदतु'** यह कहकर जल छोड़ दें। ब्राह्मण एवं गुरुजनों को प्रणाम कर चरणामृत तथा प्रसाद वितरण करें।

विसर्जन

पूजन के अंत में अक्षत लेकर गणेश एवं महालक्ष्मी की नूतन प्रतिमा को छोड़कर अन्य सभी आवाहित, प्रतिष्ठित एवं पूजित देवताओं को अक्षत छोड़ते हुए निम्न मंत्र से विसर्जित करें : **यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।**
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥

अन्नकूट महोत्सव

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को अन्नकूट महोत्सव मनाया जाता है। इस दिन गोवर्धन की पूजा कर अन्नकूट का उत्सव मनाना चाहिए। इससे भगवान विष्णु की प्रसन्नता प्राप्त होती है-

इस दिन प्रात:काल घर के द्वार देश में गौ के गोबर का गोवर्धन बनाएं तथा उसे शिखरयुक्त बनाकर वृक्ष-शाखादि से संयुक्त और पुष्पों से सुशोभित करें। अनेक स्थानों में इसे मनुष्य के आकार का भी बनाते हैं। इसके बाद गंध-पुष्पादि से गोवर्धन भगवान का षोडशोपचारपूर्वक पूजनकर निम्न प्रार्थना करनी चाहिए :

गोवर्धन धराधार गोकुलत्राणकारक।
विष्णुबाहुकृतोच्छ्रय गवं कोटिप्रदो भव॥

इसके बाद आभूषणों से सुसज्जित गौओं का यथविधि पूजन करें और निम्न मंत्र से उनकी प्रार्थना करें :

लक्ष्मीर्यालोकपालानांधेनुरूपेण संस्थिता।
घृतं वहति यज्ञार्थेमम पापं व्यपोहतु॥

इस दिन यथासामर्थ्य छप्पन प्रकार के व्यंजन बनाकर गोवर्धन रूप श्री भगवान को भोग लगाया जाता है। इसके बाद प्रसाद रूप में भक्तों में वितरित किया जाता है। रात में गौ से गोवर्धन का उपमर्दन कराया जाता है। मंदिरों में विविध प्रकार के पकवान, मिठाइयां, नमकीन और अनेक प्रकार की सब्जियां, मेवे,फल आदि भगवान के समक्ष सजाए जाते हैं तथा अन्नकूट का भोग लगाकर आरती होती है, फिर भक्तों में प्रसाद वितरण किया जाता है। व्रज में इसकी विशेषता है। काशी, मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, बरसाना, नाथद्वारा आदि भारत के प्रमुख मंदिरों में लड्डुओं तथा पकवानों के पहाड़ बनाए जाते हैं, जिनके दर्शन के लिए विभिन्न स्थानों से यात्री पधारते हैं।

गोवर्धन पूजन का रहस्य

जीव में जैस-जैसे अहंकार जड़ जमाता जाता है, वैसे-वैसे उसे पतन की गहराई की ओर घसीटता जाता है और वंचित जीवन को उसका पता तक नहीं होता। देवताओं के राजा इन्द्र भी इस अहंकार की चपेट में आ गए थे। परिणाम यह हुआ कि वे परब्रह्म परमात्मा को मरणधर्मा मनुष्य, उनके चिन्मय तज्वों को जड़ और लीला सहचरों को जंगली मान बैठे। इस पर देवराज में असुरता के बीज अहंकार का स्तर अत्यन्त उग्र होता गया।

दयावश भगवान श्रीकृष्ण ने एक ओर तो इन्द्र के इस रोग की चिकित्सा करनी चाही और दूसरी ओर गोवर्धनगिरी की 'चिन्मयता' की व्यक्त कर देने की उनकी इच्छा हुई। अतः नन्दबाबा से कहकर उन्होंने 'इन्द्रयाग' पर रोक लगा दी और उन्हीं समस्त पूजन सज़्भारों से गोवर्धन की पूजा कराई। भगवान की यह योजना शंकरजी को बहुत अच्छी लगी। वे दल-बल-सहित इस गिरि पूजन में सज़्मिलित हुए।

धजूरभङ्गविषपानविह्वलो
हिमाद्रिपुत्रीसहितो गणावृतः।
आरुह्य नन्दीश्वरमादिवाहनं
समाययौ श्रीगिरिराजमण्डलम्॥

गोवर्धन पूजा का यह औचित्य राजर्षियों, ब्रह्मर्षियों, देवर्षियों और सिद्धों से भी छिपा न था। वे भी बड़ी प्रसन्नता से इस समारोह में उपस्थित हुए। देवगिरी सुमेरु और नगाधिराज हिमालय के लिए भी गोवर्धन गिरि की चिन्मयता व्यक्त ही थी,

इसलिए उनमें जातिगत ईर्ष्या या द्वेष नहीं जगा औरवे भी बड़ी प्रसन्नता से गोवर्धन के पूजन-समारोह में उपस्थित हुए।

पूजन के समय स्वयं भगवान ने एक विशाल रूप धारण कर अपने को गोवर्धन घोषित किया और इस तरह उन्होंने गोवर्धन गिरि से अपनी अभिन्नता प्रकट की। देवता और मनुष्य भी इससे कम प्रसन्न नहीं हुए। उन्होंने फूलों और खीलों की मुक्तहस्त वर्षा शुरू कर दी। इस पर देवराज के अहंकार का पर्दा इतना घना हो चुका था कि वे गिरिराज की भगवद्रूपता तनिक भी आंक न पाए। प्रत्युत ईर्ष्या और क्रोध से जल उठे। प्रलयकारी मेघोंको आज्ञा दे बैठे कि वे व्रज को ध्वंस कर दें। स्वयं भी ऐरावत पर चढ़कर मरुद्गमओं के साथ मेघों की सहायता में आ डटे। इधर भगवान ने गोवर्धन पर्वत एक ही हाथ पर उठा इन्द्र की सज़्पूर्ण प्रलयकारी वर्षा निरर्थक कर दी। भगवान ने मन से ही शेष और सुदर्शन को आज्ञा दी और वे दोनों तत्क्षण वहां आकर उपस्थित हुए। चक्र ने पर्वत के ऊपर स्थित हो जल सज़्पात पी लिया और नीचे कुण्डलाकार हो शेषजी ने सारा जलप्रवाह रोक दिया।

जलौघमागतं वीक्ष्य भगवांस्तद्गिरेरधः।
सुदर्शनं तथा शेषंमनसाज्ञां चकार ह॥
कोटिसूर्यप्रभं चाद्रेरूर्ध्वं चक्रं सुदर्शनम्।
धारासज़्पातमपिबदगस्त्य इव मैथिल॥
अधोऽधस्तं गिरि शेषः कुण्डलीभूत आस्थितः।
रुरोध तज्जलं दीर्घंयथा वेला महोदधिम्॥

जब इन्द्र ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर देख लिया तो उनका अहंकार जाता रहा और उन्हें वस्तुस्थिति का बोध हुआ। फिर तो वे अपने को ही अपराधी पाकर भयभीत हो उठे और सीधे भगवान श्रीकृष्ण के चरणों पर आ गिरे। अब उन्हें श्रीकृष्ण के शुद्ध सज़्वमय ज्ञानघन स्वरूप का परिज्ञान हुआ और वे यह भी जान सके कि किस प्रकार उनके भीतर अहंकार विध्वंस का कार्य कर रहा था। भगवन ने इन्द्र को क्षमा कर दिया और इन्द्र नेभी आकाश गंगा के जल से श्रीकृष्ण का अभिषेक किया। इस प्रकार गोकुल की गई रक्षा से कामधेनु भी बहुत प्रसन्न हुई और उसने अपनी दुग्ध धारा से भगवन का अभिषेक किया। इन अभिषेकों को देखकर गिरिराज गोवर्धन के हर्ष का ठिकाना न रहा और वह द्रवीभूत हो बह चला। तब भगवान ने खुश होकर अपना कर कमल उपस पर जिसक चिन्ह आज भी दिखता है। इस प्रकार गोवर्धन पूजन स्वयं श्री भगवान का पूजन है।

गोवर्धन गिरिधारी

गोवर्धनकी चिन्मयता का स्पष्टीकरण गर्ग संहिता में हुआ है। अवतार के समय भगवान ने राधा से साथ चलने को कहा था। उस पर राधाजी ने कहा था कि वृन्दावन, यमुना और गोवर्धन के बिना मेरा मन पृथ्वी पर नहीं लगेगा। यह सुन कर श्रीकृष्ण ने अपने हृदय की ओर दृष्टि डाली, जिससे तत्क्षण एक सजल तेज निकल कर रासभूमि पर जा गिरा और वही पर्वत के रूप में परिणत हो गया। यह रत्नमय शृंगों, सुन्दर झरनों, कदज़्ब आदि वृक्षों एवं कुंजों से सुशोभित था। इसमें अन्य भी नाना प्रकार की दिव्य सामग्रियां थीं, जिन्हें देखकर राधाजी बहुत प्रसन्न हुई।

यम द्वितीया (भैयादूज)

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया यमद्वितीया या भैयादूज कहलाती है। इसे अपराह्णव्यापिनी ग्रहण करना चाहिए। इस दिन यमुना स्नान, यम पूजन और बहन के घर भाई का भोजन विहित है और शास्त्रीय मत के अनुसार मृत्यु देवता यमराज की पूजा होती है।

आज के दिन व्रती बहनों को प्रातः स्नानादि के अनन्तर अक्षतादि से निर्मित अष्टदल कमल पर गणेशादि का स्थापन करके यम, जमुना, चित्रगुप्त तथा यमदूतों के पूजन के अनन्तर निम्न मंत्र से यमराज की प्रार्थना करनी चाहिए-

धर्मराज नमस्तुभ्यं नमस्ते यमुनाग्रज।
पाहिमां हिङ्करैः सार्धं सूर्यपुत्र नमोऽस्तु ते॥

निम्न मंत्र से यमुना जी की प्रार्थना करें -

यमस्वसर्नमस्तेऽस्तु यमुने लोकपूजिते।
वरदा भव मे नित्यं सूर्यपुत्रि नमोऽस्तु ते।

निम्नमंत्र से चित्रगुप्त की प्रार्थना करनी चाहिए-

मसिभाजनसंयुक्तं ध्यायेत्तं च महाबलम्।
लेखनीपट्टिकाहस्तं चित्रगुप्तं नमाम्यहम्॥

इसके बाद शंख, ताम्रपात्र या अंजलि में जल पुष्प और गन्धाक्षत लेकर यमराज के निमित्त निम्न मंत्र से अर्घ्य दें-

एह्योहि मार्तण्डज पाशहस्त यमान्तकालोकधरामरेश।
भ्रातृद्वितीयाकृतदेवपूजां गृहाण चार्घ्यं भगवन्नमस्ते।

इसके बाद बहन को चाहिए कि वह भाईको एक शुभ आसन पर बैठाकर उसके हाथ-पैर धुलाए। गन्धादि से उसका पूजन करे और विभिन्न प्रकार के उत्तम व्यंजन परोसकर उसका अभिनन्दन करे।

इसके बाद भाई बहन को यथासामर्थ्य अन्न-वस्त्र-आभूषणादि देकर उसका शुभाशिष प्राप्त करे। इस व्रत से भाईकी आयु वृद्धि और बहन को सौभाग्यसुख की प्राप्ति होती है।

◆◆◆

क्या है औचित्य

यम और यमुना भगवान सूर्य की संतान हैं। दोनों भाई-बहनों में अतिशय प्रेम था। परन्तु यमराज यमलोक की शासन व्यवस्था में इतने व्यस्त रहते कि यमुनाजी के घर ही न जा पाते। एक बार यमुनाजी यम से मिलने आयी। बहन को आया देख यमदेव प्रसन्न हुए और बोले बहन! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं। तुम मुझसे जो भी वरदान मांगना चाहो, मांग लो। यमुना ने कहा - भैया! आज के दिन जो मुझ में स्नान करे, उसे यमलोक न जाना पड़े। यमराज ने कहा - बहन! ऐसा ही होगा। उस दिन कार्तिक शुक्ल द्वितीया थी, इसलिए इस तिथि को यमुना स्नान का विशेष महत्त्व है।

इसी दिन यमुना ने अपने घर अपने भाई यम को भोजन कराया और यमलोक में बड़ा उत्सव हुआ, इसलिए इस तिथि का नाम यम द्वितीया है। अतः इस दिन भाई को अपने घर भोजन न कर बहन के घर जाकर प्रेमपूर्वक उसके हाथ का बना हुआ भोजन करना चाहिए। इससे बल और पुष्टि की वृद्धि होती है। इसके बदले बहन को स्वर्णालंकार, वस्त्र तथा द्रव्य आदि से संतुष्ट करना चाहिए।

www.astrologynspiritualism.com

आचार्य अनुपम जौली व
हिमानी "अज्ञानी"
की ओर से
दीपोत्सव
पर समस्त पाठकों को हार्दिक
शुभकामनाएं